SHRI PANDI RAM MANDAVI

Shri Pandi Ram Mandavi is known for his contribution to Muria Wood art which is a significant tribal art. This unique art form has gained notable recognition in society. His efforts brought this important tribal heritage to cultural centers of regional and national significance.

2. Born on 12th February, 1957, in Garhbengal, Bastar, Shri Mandavi grew up in a family with a rich tradition of woodwork. His father was a skilled and renowned woodcarver who taught him the intricacies of the craft from a young age. He began his artistic journey by crafting wooden combs and bamboo flutes, later expanding his repertoire to include wooden swords, battle axes, bows, walking sticks, arrows, and whistling bamboo flutes.

3. Through his tireless advocacy, Shri Mandavi not only elevated the visibility of Muria Wood art but also nurtured a community of artisans who could share their skills and traditions. By organizing workshops and exhibitions, he created a platform for these talented individuals to showcase their craftsmanship and educate the public about the narratives embedded within each piece. His commitment to preserving the authenticity of this traditional art form resonated with many, drawing interest from collectors, art enthusiasts, and cultural organizations alike. These interactions sparked a renewed curiosity in tribal art, encouraging collaborations that blended contemporary designs with traditional techniques, thus revitalizing the craft without compromising its essence.

4. Shri Mandavi's work transcended mere promotion; he became a guardian of cultural heritage, ensuring that the young generation of artisans was equipped with both the knowledge and the means to carry forward their ancestral legacy. His vision encompassed not only the celebration of Muria Wood art but also the empowerment of the community that breathes life into it.

5. Shri Mandavi runs a wooden art workshop in his village. His wood works have provided him opportunities to travel to distant places in the country as also at some places in abroad like France, Italy and Russia. He has been invited for demonstration, exhibit preparation etc. on wooden Muria art in various parts of the country. He has co-curated many exhibit preparations and installations in various museums and similar other institutions, and has also worked for developing Tourist Resorts in Chhattisgarh.

6. Shri Mandavi's dedication and enthusiasm have spread his efforts across the country and beyond, benefiting the Muria Society by attracting more individuals in the world of Muria creativity and enhancing the conservation of its traditions, as well as improving earnings for the associated creators. His influence has encouraged many youths to join him in creating artwork, employing nearly two dozen artists who earn their livelihoods through this work.

7. Shri Mandavi has received several awards, including the State-Level Handicraft Award 2018-2019 from the Chhattisgarh Handicraft Development Board; the J. Swaminathan Puraskar 2011 from the Kerala Lalithakala Akademi; Dau Mandar Ji lok Natay Aur Lok Shilap Samman Chhattisgarh Government 2024 and the International Urasgatta Award 2016 from the Museum of Archaeology and Anthropology at the University of Cambridge London. He was also awarded with Dau Mandaraji Award by Chhattisgarh State in 2024.

श्री पन्डी राम मंडावी

श्री पन्डी राम मंडावी मुरिया वुड आर्ट में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं, जो एक महत्वपूर्ण आदिवासी कला है। इस अनूठी कला को समाज में उल्लेखनीय मान्यता मिली है। उनके प्रयासों से इस महत्वपूर्ण आदिवासी विरासत को क्षेत्रीय और राष्ट्रीय महत्व के सांस्कृतिक केंद्रों तक पहुंचाया गया।

2. 12 फरवरी, 1957 को गढ़बंगाल, बस्तर में जन्मे, श्री मंडावी एक ऐसे परिवार में पले–बढ़े, जिनके पास लकड़ी में काम करने की समृद्ध परंपरा थी। उनके पिता लकड़ी के एक कुशल और प्रसिद्ध नक्काशीकार थे, जिन्होंने उन्हें छोटी उम्र से ही इस शिल्प की बारीकियाँ सिखाईं। उन्होंने लकड़ी के कंघे और बांस की बांसुरी बनाकर अपनी कलात्मक यात्रा शुरू की, बाद में उन्होंने लकड़ी की तलवारें, युद्ध कुल्हाड़ी, धनुष, चलने की छड़ियाँ, तीर और सीटी बजाने वाली बांस की बांसुरी को शामिल करके अपने कलात्मक संग्रह का विस्तार किया।

3. अपनी अथक प्रयासों के माध्यम से, श्री मंडावी ने न केवल मुरिया वुड कला की दृश्यता को बढ़ाया, बल्कि कलाकारों के एक समुदाय को भी बढ़ावा दिया, जो अपने कौशल और परंपराओं को साझा कर सकते थे। कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों का आयोजन करके, उन्होंने इन प्रतिभाशाली व्यक्तियों के लिए अपनी शिल्पकला का प्रदर्शन करने और प्रत्येक कृति में निहित कथाओं के बारे में जनता को शिक्षित करने के लिए एक मंच तैयार किया। इस पारंपरिक कला रूप की प्रामाणिकता को संरक्षित करने की उनकी प्रतिबद्धता ने कई लोगों को प्रभावित किया, जिससे संग्रहकर्ताओं, कला प्रेमियों और सांस्कृतिक संगठनों की रुचि बढ़ी। इस आदान–प्रदान से आदिवासी कला में नई जिज्ञासा जगाई, ऐसी साझेदारियों को प्रोत्साहित किया जो समकालीन डिजाइनों का मिश्रण पारंपरिक तकनीकों के साथ करते थे, इस प्रकार मूल भावना से समझौता किए बिना कला को पुनजीर्वित किया गया।

4. श्री मंडावी का काम सिर्फ़ प्रचार–प्रसार तक ही सीमित नहीं था; वह सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक बन गए, उन्होंने सुनिश्चित किया कि कलाकारों की युवा पीढ़ी को अपने पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए ज्ञान और साधनों दोनों से सुसज्जित किया जाए। उनकी दृष्टि में न केवल मुरिया वुड कला को आगे बढ़ाना शामिल था, बल्कि उस समुदाय का सशक्तिकरण भी करना था जो उसमें जान फूंकता है।

5. श्री मंडावी अपने गांव में वुडन आर्ट वर्कशाप चलाते हैं। उनकी लकड़ी की कलाकृतियों ने उन्हें देश के दूर–दराज के इलाकों के साथ–साथ विदेश में फ्रांस, इटली और रूस जैसे देशों में भी यात्रा करने का अवसर प्रदान किया है। उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में लकड़ी की मुरिया कला पर प्रदर्शन, प्रदर्शनी तैयार करने आदि के लिए आमंत्रित किया गया है। उन्होंने विभिन्न संग्रहालयों और इसी तरह की अन्य संस्थाओं में कई प्रदर्शनी संबंधी तैयारियों और संस्थापनाओं का सह–संचालन किया है और साथ ही छत्तीसगढ़ में पर्यटक रिसॉर्ट विकसित करने के लिए भी काम किया है।

6. श्री मंडावी के समर्पण और उत्साह ने उनके प्रयासों का पूरे देश और उसके बाहर प्रसार किया है, जिससे मुरिया रचनात्मकता की दुनिया में अधिक से अधिक व्यक्तियों को आकर्षित करके मुरिया समाज को लाभ हुआ है और इसकी परंपराओं के संरक्षण को बढ़ावा मिला है, साथ ही इससे जुड़े रचनाकारों की आय में भी सुधार हुआ है। उनके प्रभाव ने कई युवाओं को कलाकृति बनाने में उनके साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया है, जिससे लगभग दो दर्जन कलाकारों को काम मिला है जो इस काम से अपनी आजीविका कमाते हैं।

7. श्री मंडावी को कई पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड से राज्य स्तरीय हस्तशिल्प पुरस्कार 2018–2019, केरल ललित कला अकादमी से जे. स्वामीनाथन पुरस्कार 2011, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा दाऊ मांदर जी लोक नाट्य और लोक शिल्प सम्मान 2024 और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय लंदन के पुरातत्व एवं मानव विज्ञान संग्रहालय से अंतर्राष्ट्रीय उरसगट्टा पुरस्कार 2016 शामिल हैं। वर्ष 2024 उन्हें में छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा दाऊ मांदर जी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।